स्त्री और पुरुष की बाइबलीय समानता – शिक्षा देने और अगुवाई में भी

Hans-Jörg Ronsdorf · सितंबर 2023 · अक्टूबर 2026 में संशोधित

अवलोकन और विषय-सूची

शब्दावली का संक्षिप्त परिचय[1]:

- शिक्षा देना और अगुवाई
- पूरकतावाद
- समानतावाद

स्त्रियों के अगुवाई करने और शिक्षा देने के विरुद्ध तर्क

- शिक्षा देने पर प्रतिबंध
- चुप रहने की आज्ञा
- सिर और अधीनता
- इस्राएल के पुरुष याजक और यीशु के 12 चेले
- प्राचीनों, अध्यक्षों और सेवकों (डीकनों) की योग्यताएँ

पुरुषों और स्त्रियों की समानता के पक्ष में तर्क, शिक्षा देने और अगुवाई में भी:

- सृष्टि पर आधारित तर्क
- पुराने नियम में स्त्रियाँ
- नए नियम में स्त्रियाँ
- ऐतिहासिक तर्क – कलीसिया के इतिहास में स्त्रियाँ
- उद्धार-शास्त्रीय (सोटेरियोलॉजिकल) तर्क
- आत्मिक वरदानों पर आधारित (करिश्माई) तर्क

सारांश

- स्त्री-पुरुष संबंध की मेरी परिभाषा

उद्धरण: “हाँ, वास्तव में ये दो बाइबल-पाठ हैं जो पीढ़ियों से स्त्रियों के होने या न होने का निर्णय करते आए हैं।”

जब मैंने यह वाक्य पहली बार पढ़ा, तो मैंने सोचा कि यह तो शुद्ध नारीवाद जैसा सुनाई देता है। आज, वर्षों बाद, मुझे मानना पड़ता है कि यह वाक्य सही है, भले ही इसे बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया हो। हाल ही में IDEA पत्रिका में छपे लेखों और पाठकों के पत्रों ने मेरे लिए एक बार फिर इसकी पुष्टि की है।

शब्दावली का संक्षिप्त परिचय:

अगुवाई और शिक्षा देना

जो लोग किसी कलीसिया की अगुवाई करते हैं, उन्हें नए नियम में (आगे से संक्षेप में: नया नियम) अलग-अलग शब्दों से पुकारा गया है:

- अध्यक्ष (यूनानी episkopos; फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:1),
- प्राचीन (यूनानी presbyteros; तीतुस 1:5)
- सेवक / डीकन (यूनानी diakonos; 1 तीमुथियुस 3:8)
- चरवाहे (यूनानी poimen; इफिसियों 4:11)
- अगुवे, मार्गदर्शक (यूनानी hegeomai; इब्रानियों 13:17; प्रेरितों के काम 15:22, संभवतः स्थानीय कलीसिया से ऊपर के स्तर पर)

प्रेरितों के काम 20:17, 28 में अध्यक्ष और प्राचीन पर्यायवाची रूप में प्रयोग किए गए हैं, एक ही सेवा/पद के दो नामों के रूप में। यद्यपि उनकी सेवा की विषय-वस्तु से अधिक उसके लिए आवश्यक योग्यताओं का वर्णन किया गया है, फिर भी यह कहा जा सकता है:

- वे "अगुवे होते हैं" और देखभाल के साथ कलीसिया की अगुवाई करते हैं और परमेश्वर के सामने उसके लिए उत्तरदायी हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:12; इब्रानियों 13:17; 1 पतरस 5:2-3);
- वे कलीसिया को भीतरी खतरों (झगड़े, फूट आदि) से बचाते हैं और झूठी शिक्षा का विरोध करते हैं (तीतुस 1:9; प्रेरितों के काम 20:28-31) और सुधारते हैं;
- वे लोगों की पास्तरीय देखभाल करते हैं और निर्बलों को सँभालते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:12; इब्रानियों 13:17; प्रेरितों के काम 20:35);
- एक चरवाहे के समान वे कलीसिया को मार्गदर्शन, सुरक्षा और आत्मिक भोजन देते हैं (प्रेरितों के काम 20:28; 1 पतरस 5:2 आदि)। झुंड कलीसिया है, जिसमें बलवान और निर्बल, बूढ़े और जवान, स्त्रियाँ और पुरुष, किशोर और बच्चे हैं।

पतरस और यूहन्ना को छोड़कर नए नियम में ऐसे किसी एक भी व्यक्ति का, न पुरुष का न स्त्री का, नाम नहीं लिया गया है। शायद एक अपवाद है: कुरिन्थुस के पास किंख्रिया की फीबे को सेविका (यूनानी diakonos) और संरक्षिका/अगुवा (यूनानी prostatis) कहा गया है (रोमियों 16:1-2)।

पास्टर, जैसा हम उसे आज जानते हैं, नए नियम में नहीं मिलता, बल्कि वह इन शब्दों और उनसे जुड़ी सेवाओं का एक सार या मिश्रण है। इसलिए नया नियम ऐसे किसी व्यक्ति को संबोधित नहीं कर सकता, क्योंकि ऐसा व्यक्ति उस रूप में था ही नहीं; और न ही वह इसे मना कर सकता है या इसका समर्थन कर सकता है कि स्त्रियाँ पास्टर हो सकती हैं या नहीं।

प्रेरितों के काम और पौलुस की पत्रियाँ आरंभिक पौलुसीय कलीसियाओं में किसी औपचारिक पद का उल्लेख नहीं करतीं। आज हमारे लिए ठीक-ठीक समझना कठिन है कि कलीसियाओं की अगुवाई कैसे होती थी, क्योंकि नए नियम के प्रमाण अगुवाई के लिए कोई एकसमान उपाधियाँ नहीं दिखाते। अगुवाई महत्वपूर्ण थी और उस पर ज़ोर

दिया जाता था, परन्तु पौलुस अक्सर दूसरे अगुवों को बिलकुल सामान्य रूप से "सहकर्मी" या "संगी योद्धा" कहता था। वह अगुवों को उपाधियाँ देने के बजाय उनके कार्यों के संदर्भ में उनके विषय में बात करना पसंद करता था।

शिक्षक होना (यूनानी didaskalos, 1 कुरिन्थियों 12:28) या अगुवा/प्रधान होना (यूनानी kybernesis, 12:28; या यूनानी proistemi, रोमियों 12:8; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12; 1 तीमुथियुस 5:17) अलग-अलग कार्य और भिन्न वरदान हैं, जो परन्तु एक ही व्यक्ति में दोनों हो सकते हैं।

प्रधान होने और अगुवाई करने का अर्थ प्रभुता करना नहीं है (1 तीमुथियुस 2:12 के अर्थ में भी नहीं, जहाँ एक स्त्री को पुरुष पर प्रभुता करने से मना किया गया है)। यीशु इन सेवाओं का वर्णन इस प्रकार करता है:

> "यह सुनकर दसों याकूब और यूहन्ना पर क्रोधित होने लगे। तब यीशु ने उनको पास बुलाकर उनसे कहा, 'तुम जानते हो कि जो जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं, और उनमें जो बड़े हैं उन पर अधिकार जताते हैं। पर तुम में ऐसा नहीं है; **वरन् जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने; और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने**।'" मरकुस 10:41-44
>
> "उनमें यह वाद-विवाद भी हुआ कि उनमें से कौन बड़ा समझा जाता है। उसने उनसे कहा, 'जातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं, और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं। परन्तु तुम ऐसे न होना; वरन् जो तुम में बड़ा है, वह छोटे के समान और **जो अगुवा है** (यूनानी hegeomai) **वह सेवक के समान बने**। क्योंकि बड़ा कौन है, वह जो भोजन पर बैठा है या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? परन्तु मैं तुम्हारे बीच में सेवक के समान हूँ।' लूका 22:24-27
>
> "परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में है, रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु स्वेच्छा से, और नीच कमाई के लिए नहीं, पर मन लगाकर; और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर **प्रभुता** जताने वालों के समान नहीं, वरन् झुंड के लिए आदर्श बनो।" 1 पतरस 5:2-3

अध्यक्षों की सेवा में एक ऐसा अधिकार शामिल है जो परमेश्वर का दिया हुआ है और विभिन्न वरदानों पर आधारित है, और जो आदर्श जीवन में एक नैतिक अधिकार के रूप में अनुभव किया जाता है। कलीसिया अध्यक्ष को उसके पद के साथ उसी रूप में मान्यता देती है।

प्रेरितों की **शिक्षा** है, अर्थात् वह अच्छी और खरी शिक्षा जो भक्ति के अनुसार है, जो हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की है, मसीह की शिक्षा (प्रेरितों के काम 2:42; 1 तीमुथियुस 1:10; 4:6; 6:3; तीतुस 2:10; 2 यूहन्ना 9)। शिक्षा की विषय-वस्तु सुसमाचार है, परमेश्वर की मनसा, और अंततः पुराने और नए नियम का सारा पवित्र शास्त्र। तीमुथियुस से इसे सिखाने को कहा गया था, प्राचीनों को सिखाने में निपुण होना चाहिए, और शिक्षक का आत्मिक वरदान या अनुग्रह-वरदान भी है।

अगुवाई करने में शिक्षा देना भी शामिल है। इसका प्रभुता करने से कोई संबंध नहीं है। यहाँ भी एक अधिकार है। परन्तु वह इसमें है कि व्यक्ति शिक्षा देने के योग्य हो और कलीसिया के भीतर ऐसे व्यक्ति के रूप में मान्य हो जो खरी शिक्षा आगे पहुँचा सके और सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में ला सके। शिक्षक सीखने वालों की सेवा करता है।

प्रचार करना, जैसा हमारी कलीसियाओं की आराधना-सभाओं में होता है, शिक्षा देने के बराबर नहीं है। पौलुस "प्रचार करने" को सेवा के वरदानों और कार्यों की अपनी सूची में नहीं गिनाता, संभवतः इसलिए कि प्रचार करना कोई ऐसी बात नहीं थी जो सामान्य रूप से कलीसियाओं की सभाओं में होती थी। यह संगी विश्वासियों के प्रति सेवा

नहीं थी। नए नियम में मसीही सेवा के संदर्भ में प्रचार करना व्यावहारिक रूप से सुसमाचार सुनाने (इवैन्जलाइज़ करने) के समान है (यूनानी kerysso: प्रचार करना, घोषणा करना, पुकार कर सुनाना)। और आरंभ से ही स्त्रियों ने अपने परिवारों और मित्रों को, और उनसे आगे भी, सुसमाचार सुनाया।

अब दो ऐसे शब्दों की बात, जो बाइबल में इस रूप में नहीं मिलते। वे मसीही जगत में लिंग-प्रश्न पर विचार की दो विवादित धाराओं के नाम हैं।

पूरकतावाद

यह शब्द अमेरिकी प्रयोग से आया है और जॉन पाइपर (John Piper) और वेन ग्रुडेम (Wayne Grudem) जैसे प्रसिद्ध धर्मवैज्ञानिकों ने इसे स्त्री और पुरुष के संबंध पर लागू किया। यह स्थिति 1988 में तथाकथित **Danvers Statement on Biblical Manhood and Womanhood** में प्रकाशित की गई (यहाँ जर्मन भाषा में डाउन-लोड की जा सकती है: **Danvers-Erklaerung.pdf (reformierte-freikirche.de)** (कृपापूर्ण अनुमति से))। तभी से यह शब्द जर्मन-भाषी क्षेत्र में भी स्त्री और पुरुष के संबंध का वर्णन करने के लिए प्रचलित हुआ है, परन्तु एक पदानुक्रमिक संबंध के रूप में। स्त्री समान मूल्य वाली है, परन्तु समान दर्जे वाली नहीं। लिंगों के भेद का वर्णन "समान मूल्य, परन्तु भिन्न भूमिकाएँ" के रूप में किया जाता है। कुछ सेवाएँ ऐसी हैं जिन्हें वह, क्योंकि वह स्त्री है, नहीं कर सकती। इस दृष्टिकोण में इनमें सबसे बढ़कर पुरुषों को शिक्षा देना और उनकी अगुवाई करना शामिल है।

परन्तु पूरकतावाद कलीसिया की ऐतिहासिक शिक्षा को **प्रतिबिंबित नहीं** करता, जो लगभग 60 वर्ष पहले तक पु-रुष की तुलना में स्त्री की हीनता और निम्नता को मानकर चलती थी। इसी कारण स्त्री का अधीन होना माना गया – कुल मिलाकर स्त्री के प्रति एक निम्न और प्रतिबंधात्मक दृष्टिकोण। समान मूल्य और व्यापक समानता, जैसा पूरक-तावाद प्रस्तुत करता है, एक नई घटना है, लगभग 60 वर्ष से अधिक पुरानी नहीं। इसके विभिन्न रूप हैं, अर्थात् इस बात का एक पूरा दायरा कि पुरुष को प्राथमिकता देने और स्त्री को सीमित करने की व्याख्या कैसे की जाती है।

मैं आज के सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) पूरकतावाद को पितृसत्ता का एक संशोधित, संयमित या नरम रूप मा-नता हूँ, जो स्वयं पतन का एक परिणाम है। साथ ही मैं जानता हूँ कि अच्छी तरह चलने वाले और प्रेमपूर्ण वैवाहिक संबंध भी होते हैं, भले ही उस संबंध को ऊपर बताए गए अर्थ में पूरकतावादी रूप में समझा और जिया जाता हो। परन्तु इससे यह दृष्टिकोण न तो सही बनता है और न ही बाइबलीय।

समानतावाद

अंग्रेज़ी-भाषी क्षेत्र में उस दृष्टिकोण को, जिसे मैं कुछ सीमाओं के साथ मानता हूँ, समानतावाद (इगैलिटेरियनिज़्म) कहा जाता है। यहाँ यह महत्वपूर्ण है कि इस शब्द के पीछे ठीक-ठीक क्या छिपा है और उसकी विषय-वस्तु ठीक-ठीक क्या है। स्त्री और पुरुष का यह दृष्टिकोण पूरकतावाद के साथ-साथ ही उत्पन्न हुआ। जर्मन भाषा के प्रयोग में "egalitär" (समानतावादी) का लक्ष्य सामाजिक न्याय और अवसरों की समानता है। इसकी परिभाषा यह है: किसी समाज या समुदाय के भीतर लिंग या अन्य विशेषताओं के कारण कोई भेदभाव न हो।

इसके साथ मैं पूरी तरह खड़ा हूँ, और विश्वासी स्त्रियाँ भी पिछले 100 वर्षों के स्त्री-अधिकार आंदोलन की सब उप-लब्धियों का धन्यवाद के साथ लाभ उठा सकती हैं, भले ही वे स्वयं कभी इन आंदोलनों का भाग नहीं रहीं या होना नहीं चाहतीं।

परन्तु इस शब्द में सबको एक जैसा बना देने की ध्वनि भी है, जिसे मैं उतना ही अस्वीकार करता हूँ। स्त्री और पुरुष का अनेक दृष्टियों से सुंदर भेद सृष्टि की व्यवस्था का भाग है और समानतावाद के द्वारा उसे मिटाया नहीं जाना चाहिए। बेहतर शब्द **पारस्परिकतावाद (म्यूचुअलिज़्म)** होगा, जो एक दूसरे के आमने-सामने होने की आपसी और परस्पर प्रकृति पर ज़ोर देता है।

व्यक्तिगत बात

कुछ वर्ष पहले तक मैं पूरकतावाद को मानता था और अपनी कलीसिया और विवाह में उसे जीता और सिखाता था। इसका अर्थ यह है कि पति के रूप में मैं अपनी पत्नी से प्रेम करता हूँ और सहयोग करता हूँ, परन्तु मूल रूप से अगुवाई और अंतिम निर्णय मेरा होता है। इसका यह भी अर्थ है कि स्त्रियाँ अगुवाई और प्रचार नहीं करतीं, न ही कलीसिया के सामने शिक्षा देती हैं। सांसारिक पितृसत्ता के इस "नरम" या "मसीहीकृत" रूप को मुझे निरंतर बाइबल-अध्ययन के कारण और बाइबल के प्रति विश्वासयोग्य लेखकों की रचनाओं के द्वारा छोड़ना पड़ा। मेरे लिए यह एक कठिन प्रक्रिया थी, क्योंकि दशकों तक मैंने इसे ठीक इसके विपरीत समझा और जिया था। आज मैं आभारी हूँ कि मेरी आँखें इस बात पर खोली गईं कि मैं कितना गलत था। अपनी पुस्तक "स्त्रियो, हमें क्षमा कीजिए!" (Frauen, vergebt uns!) में मैंने 2020 में इसे विस्तार से प्रस्तुत किया है, और अपनी वेबसाइट पर अपने या अन्य लेखकों के नए लेखों के द्वारा इसका आधार दिया है:

www.hans-joerg-ronsdorf.de

अपने व्याख्यान के अंत में मैं संक्षेप में बताऊँगा कि आज मैं ठीक-ठीक क्या मानता हूँ और धर्मवैज्ञानिक चर्चा में अपने दृष्टिकोण को क्या नाम देता हूँ।

अगुवाई करने और शिक्षा देने के विरुद्ध तर्क:

आज का यह आयोजन दिखाता है कि इस विषय पर मूल रूप से भिन्न मत हैं। इसके साथ अक्सर बहुत भावनाएँ जुड़ी होती हैं, जो वस्तुनिष्ठ आदान-प्रदान को कठिन बना देती हैं। आज हर कोई अपने इतिहास, अपनी पृष्ठभूमि, अपने विश्वास, अपने अच्छे और बुरे अनुभवों और अपनी अपेक्षाओं के साथ आया है। और आशा है कि इस खुलेपन के साथ, और थोड़ी-सी सहजता के साथ भी, कि वह स्वयं पर प्रश्न उठा सके।

आगे मैं उन आपत्तियों पर विचार करूँगा जो मेरे विचार में कलीसिया में बहनों के अगुवाई करने और शिक्षा देने के विरुद्ध सबसे अधिक उठाई जाती हैं। ठीक इन्हीं तर्कों को मैं स्वयं मानता था। मेरे लिए वे पूरी तरह स्पष्ट और विश्वसनीय थे। इनसे हटने का अर्थ मेरे लिए यह था कि बाइबल के केंद्र से हटकर संसार के अनुरूप हो जाना, जहाँ बराबरी के अधिकार और नारीवाद को विभिन्न वैचारिक रूपों में मनाया जाता है।

शिक्षा देने पर प्रतिबंध

मेरे लिए पौलुस का यह वचन एक स्पष्ट निर्देश था, जिसे मैं यहाँ उद्धृत करता हूँ:

> "स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता में सीखना चाहिए। **और मैं कहता हूँ कि स्त्री न शिक्षा दे और न पुरुष पर प्रभुता करे, परन्तु चुपचाप रहे**, क्योंकि आदम पहले बनाया गया, उसके बाद हव्वा; और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकावे में आकर अपराधिनी हुई।" 1 तीमुथियुस 2:11-14

किसी समय मेरा ध्यान इस ओर गया कि यद्यपि यह एक स्पष्ट निर्देश प्रतीत होता है, स्त्रियों के लिए शिक्षा देने पर यह प्रतिबंध केवल एक ही पद से – मैं दोहराता हूँ, केवल एक ही पद से – जोड़ा जा सकता है। यह अजीब है, यदि कोई सब समयों और सब स्थानों के लिए इस निर्देश की पहुँच पर एक बार विचार करे।

शिक्षा देने पर इस प्रतिबंध को ठीक से समझने के लिए यह पूछना होगा: क्या यह शिक्षा देने पर पूर्ण प्रतिबंध है? क्या यह केवल पुरुषों के प्रति लागू होता है? क्या वह स्त्रियों, किशोरों और बच्चों को शिक्षा दे सकती है? या क्या वह झूठी शिक्षा नहीं दे सकती, पर खरी शिक्षा दे सकती है? केवल इस एक पद से इसका उत्तर देना असंभव है।

हमेशा की तरह केवल एक ही वचन मान्य नहीं होता; पूरे पवित्र शास्त्र से पूछना आवश्यक है। पवित्र शास्त्र की तुलना पवित्र शास्त्र से करनी है। लूथर के शब्दों में: "पवित्र शास्त्र स्वयं अपनी व्याख्या करता है।"

इसलिए मैं आगे आने वाले पदों को पौलुस के ऊपर दिए गए वचन, अर्थात् स्त्रियों के लिए तथाकथित शिक्षा-प्रतिबंध, से मिलाकर देखूँगा:

> यीशु अपने चेलों से कहता है: "इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, **और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ**। और देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूँ।" मत्ती 28:18-20

यह सब के लिए, स्त्रियों के लिए भी, शिक्षा देने का यीशु का आदेश है। स्त्रियाँ भी यीशु के चेलों के समूह में थीं। चेलिनें, अर्थात् शिष्याएँ, भी यीशु से सीखती थीं, ताकि फिर दूसरों को सिखा सकें। **यीशु यही चाहता है!** यह किसी भी रूप में हो सकता है, किसी भी स्थान पर, कलीसिया की आराधना-सभाओं में, पुरुषों के सामने या केवल स्त्रियों के सामने, पारिवारिक-निजी या सार्वजनिक क्षेत्र में।

> "और वह (अपुल्लोस) आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा। परन्तु (पति-पत्नी) **प्रिस्किल्ला और अक्विला** ने उसकी बातें सुनकर उसे अपने यहाँ ले गए और **परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक-ठीक बताया**" (प्रेरितों के काम 18:26)।

परमेश्वर का मार्ग, अर्थात् उद्धार-इतिहास। और मसीही बपतिस्मा, क्योंकि अपुल्लोस स्पष्ट रूप से केवल यूहन्ना का बपतिस्मा जानता था। "बताना/व्याख्या करना" को "शिक्षा देना" या "सिखाना" के अर्थ में समझना चाहिए। जो 1 तीमुथियुस 2:12 को शिक्षा-प्रतिबंध के रूप में हर स्त्री/बहन पर लागू करता है, उसे इसे प्रिस्का पर भी लागू करना होगा। तथ्य बस इतना है: उसने शिक्षा दी और वह चुप नहीं रही। यह इफिसुस में हुआ, जहाँ उसने और उसके पति ने अपुल्लोस को सिखाया – वही स्थान जहाँ तीमुथियुस को पौलुस की वह पत्री मिली जिसमें शिक्षा-प्रतिबंध है। यदि यहाँ कोई सार्वभौमिक शिक्षा-प्रतिबंध समझे, तो उसे यह इस प्रकार कहना पड़ेगा: **परन्तु मैं प्रिस्का को अनुमति नहीं देता कि वह शिक्षा दे या पुरुष (अपुल्लोस) पर प्रभुता करे, परन्तु चुपचाप रहे।** क्योंकि हम मानते हैं कि परमेश्वर का प्रेरित वचन अपने भीतर कोई विरोधाभास नहीं रखता, इसलिए हमें कलीसिया में स्त्रियों के लिए सार्वभौमिक शिक्षा-प्रतिबंध को अस्वीकार करना होगा।

पौलुस किसी मसीही सभा में **सब उपस्थित लोगों** से कहता है:

> "इसलिए हे भाइयो (भाई-बहनों के अर्थ में, अर्थात् भाई और बहनें), क्या करना चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो **हर एक के** हृदय में भजन, **या उपदेश**, या प्रकाशन, या अन्य भाषा, या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है; सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए हो।" (1 कुरिन्थियों 14:26)।

पौलुस तीमुथियुस को निर्देश देता है कि **मनुष्य** (यूनानी anthropois; भाई **और** बहनें) दूसरों को **सिखाएँ**, ताकि वे फिर दूसरों को **सिखा** सकें:

> "और जो बातें तू (तीमुथियुस) ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें ऐसे विश्वासी **लोगों** को सौंप दे, जो **दूसरों को भी सिखाने** के योग्य हों। 2 तीमुथियुस 2:2

इसी अर्थ में **बूढ़ी स्त्रियाँ "अच्छी बातें सिखाने वाली"** हों (तीतुस 2:3)। इस शिक्षा का स्थान और ढाँचा न तो निर्धारित है और न सीमित; विशेषकर जवान स्त्रियों को वे सिखाएँ। **(स्त्री प्राचीन;** यूनानी presbutidas, चौथी शताब्दी में स्त्री प्राचीनों को यही कहा जाता था; परन्तु यहाँ इसका अर्थ केवल एक वृद्ध स्त्री भी हो सकता है।**)**

निष्कर्ष: स्त्रियों के शिक्षा देने पर कोई प्रतिबंध नहीं है। चाहे कोई भी स्थान हो, चाहे वे किसी को भी सिखाएँ। निर्णायक है उनका वरदान, खरी शिक्षा देने में उनकी विश्वसनीयता, और कलीसिया के द्वारा उनकी पुष्टि कि उनकी सेवा वांछित है या कलीसिया और उसके अगुवों द्वारा अधिकृत है। **इसलिए उद्धृत पाठों की पृष्ठभूमि में पौलुस का यह वचन कोई कालातीत और विश्वव्यापी शिक्षा-प्रतिबंध नहीं हो सकता!**

जैसा कि 1 तीमुथियुस की पत्री कई बार दिखाती है, बात झूठी शिक्षा की और उन स्त्रियों की है जो उसे घरों में ले जाती थीं। यहाँ पौलुस इफिसुस की धनी स्त्रियों की एक **स्थानीय समस्या** को संबोधित करता है, जो स्वयं को बुलाया हुआ समझती थीं और ऐसा करने का अधिकार या प्रभुत्व हथिया लेती थीं। यह **समय से बंधा हुआ निर्देश** है, इस ग्रह की हर मसीही स्त्री के लिए कोई मानक निर्देश नहीं। इफिसुस की इस एक या कई समस्या पैदा करने वाली स्त्रियों को पहले तत्परता से और सीखने की इच्छा के साथ खरी शिक्षा के अधीन होना था, ताकि वे शिक्षा देने के योग्य बनें, और फिर शायद स्त्री प्राचीन बनें। यह प्रमाणित रूप से कोई विशेष स्त्री-समस्या नहीं है कि कोई झूठी शिक्षा दे, क्योंकि उसने खरी शिक्षा के अधीन रहकर नहीं सीखा। परन्तु इफिसुस में यह एक समस्या थी, जिसे तीमुथियुस को सँभालना था।

"मैं स्त्री को पुरुष पर **प्रभुता करने** की अनुमति नहीं देता" वाक्य में "प्रभुता करना" (यूनानी authentein) शब्द कोई सकारात्मक शब्द नहीं है। यह नए नियम में केवल इसी स्थान पर आता है और प्रभुता करने के लिए सामान्य रूप से प्रयोग होने वाला शब्द नहीं है। इसके विपरीत, यह नकारात्मक है और इसका अर्थ है "**अधिकार हथिया लेना**" (अंग्रेज़ी King James Version का यही शब्द है), **और वह भी बिना अधिकार के।**

बोलने पर प्रतिबंध

शिक्षा-प्रतिबंध वाले पाठ को अक्सर सीधे 1 कुरिन्थियों 14 के बोलने के प्रतिबंध से जोड़ा जाता है। वास्तव में यही दो पाठ हैं जो स्पष्ट रूप से हमारे विषय पर कुछ कहते हैं और विशेष रूप से स्त्रियों को सीमित करते हैं। लगभग 10 वर्ष पहले तक मेरे लिए यह स्पष्ट था कि स्त्रियाँ आराधना-सभा में चुप रहें, जैसा कि निम्नलिखित पद स्पष्ट रूप से निर्धारित करते हैं:

> "स्त्रियाँ कलीसिया की सभा में **चुप रहें**, क्योंकि उन्हें **बातें करने की अनुमति नहीं**, परन्तु अधीन रहें, जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। और यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने-अपने पति से पूछें, क्योंकि **स्त्री का कलीसिया की सभा में बातें करना लज्जा की बात है**।" 1 कुरिन्थियों 14:34-35

मेरे इस स्पष्ट विश्वास पर स्वयं पौलुस ने प्रश्न खड़ा कर दिया, जो इससे पहले 11:5 में उन स्त्रियों की बात करता है जो प्रार्थना करती हैं और भविष्यद्वाणी करती हैं, और बहुत संभव है कि आराधना-सभा में। और इसलिए भी कि

अध्याय 14 में पौलुस की कम से कम 5 ठोस आज्ञाएँ हैं कि सब भाई-बहन कलीसिया की उन्नति के लिए अपने वचनों के साथ भाग लें। एक सर्वसाधारण याजकपद भी, जो परमेश्वर को स्तुति के बलिदान चढ़ाता है, जिन्हें होठों का फल कहा गया है, चुप्पी के साथ सोचा भी नहीं जा सकता। प्रसंगवश, जब आराधना-सभा में हन्ना की स्तुति या मरियम का स्तुतिगान (मैग्निफ़िकट) पढ़ा जाता है, तब ये स्त्रियाँ प्रेरित वचन के द्वारा बोलती हैं।

ये पद इसलिए एक बड़ी पहेली हैं, क्योंकि ये उन सब बातों के विरुद्ध हैं जो पौलुस और नया नियम, और पुराना नियम भी, सामान्य रूप से और विशेष रूप से कहते हैं। इस विरोधाभास के लिए, जिसे अधिकांश बाइबल पढ़ने वाले पहचानते हैं, अनगिनत व्याख्या-प्रयास हैं। बाइबल के प्रति विश्वासयोग्यता के उद्देश्य से कुछ कलीसियाएँ पूर्ण चुप्पी को लागू करने का प्रयास करती हैं। मैं ब्रदरन आंदोलन से आता हूँ, जहाँ आज भी ऐसा ही किया जाता है। वहाँ स्त्रियाँ न प्रचार कर सकती हैं, न प्रार्थना कर सकती हैं, न गीत सुझा सकती हैं, न आराधना-सभा की अगुवाई कर सकती हैं। वे केवल साथ में गा सकती हैं और आमीन कह सकती हैं।

इन दोनों पदों में स्त्रियों को तीन बार बोलने से मना किया गया है, या उन्हें चुप रहने का निर्देश दिया गया है। **यह पूर्ण और कठोर है और इससे न तो बचा जा सकता है और न ही व्याख्या के द्वारा इसे सुलझाया जा सकता है।** ब्रदरन आंदोलन के बाहर के रूढ़िवादी या बाइबल के प्रति विश्वासयोग्य व्याख्याकार इस निरपेक्ष चुप्पी की आज्ञा को सुलझाने का प्रयास करते हैं, परन्तु ऐसा करके वे बार-बार चुप्पी की पूर्ण आज्ञा को ढीला कर देते हैं।

फ़िलिप बी. पेन (Philip B. Payne) ने प्रमाणित किया है कि कोडेक्स वैटिकनस (Codex Vaticanus) और कोडेक्स फ़ुल्डेन्सिस (Codex Fuldensis) में (चौथी और छठी शताब्दी की महत्वपूर्ण और विस्तृत हस्तलिपियाँ) इन पदों को बाद में जोड़े गए अंश के रूप में चिह्नित किया गया है। इसके अतिरिक्त ये दोनों पद कहीं तो इसी स्थान पर, जैसे हमारे यहाँ, पद 33 के बाद आते हैं, परन्तु अन्य हस्तलिपियों में पद 40 के बाद। इस मात्रा में यह अनोखा है और इस बात का संकेत है कि यह पाठ एक हाशिये की टिप्पणी था, जिसे बाद में किसी प्रतिलिपिकार ने उस स्थान पर डाल दिया जहाँ उसे उचित लगा। हाशिये से एक बार डाल दिए जाने के बाद सब प्रतिलिपिकारों ने परिश्रम से उसकी नकल की, मानो वह पौलुस का मूल पाठ हो।

न तो नए नियम में और न पुराने नियम में ऐसे दूरगामी परिणामों वाली – इस स्थिति में स्त्रियों के लिए – कोई ऐसी आज्ञा है जो इसके निकट भी हो और इस पाठ की पुष्टि कर सके। इसलिए यह पाठ कोई मानक निर्देश नहीं हो सकता। बहुत से बाइबल-टीकाकार और बाइबल-अनुवादक इन पदों को पौलुस का नहीं मानते, बल्कि एक प्रारंभिक जोड़ (दूसरी शताब्दी) मानते हैं।

वैसे, इन पदों को व्यावहारिक और पूरी तरह सुसंगत रूप से लागू करना लगभग असंभव है। सामान्य बुद्धि ही हमें बताती है कि स्त्रियों को सभा में हर प्रकार से बोलने से मना नहीं किया जा सकता।

शिक्षा देने और अगुवाई की पूरी चर्चा में ये पद गिने नहीं जा सकते।

सिर और अधीनता

तथाकथित शिक्षा-प्रतिबंध वाला पाठ और तथाकथित चुप्पी की आज्ञा स्त्री की आवश्यक अधीनता की ओर संकेत करते हैं। नए नियम में कम से कम सात बार स्त्रियों से कहा गया है कि वे अपने पतियों के अधीन रहें। ऐसा क्यों है? इसका कारण सृष्टि की व्यवस्था नहीं हो सकती (इस पर बाद में और), क्योंकि वह पदानुक्रम का कोई ऐसा भेद स्थापित नहीं करती जिससे अधीनता निकाली जा सके।

मुख्य रूप से दो पाठों की बात है: एक इफिसियों 5 से और दूसरा 1 पतरस 3 से।

> "मसीह के भय से **एक दूसरे के अधीन रहो**। हे पत्नियो, अपने-अपने पति के [अधीन रहो], जैसे प्रभु के।" इफिसियों 5:21-22

पौलुस सबसे पहले एकतरफ़ा नहीं, बल्कि परस्पर अधीनता की माँग करता है।

> "इसी प्रकार हे पत्नियो, **तुम भी अपने-अपने पति के अधीन रहो**, इसलिए कि यदि इनमें से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों, तो भी तुम्हारे चालचलन के द्वारा बिना वचन के खिंच जाएँ, ... **वैसे ही हे पतियो**, [अपनी-अपनी पत्नी के अधीन रहो] तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के अनुग्रह के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ।" 1 पतरस 3:1, 7

पतरस के यहाँ भी वैसा ही है जैसा पौलुस के यहाँ – वह परस्पर अधीनता की माँग करता है, एकतरफ़ा नहीं। फिर भी, मानो एक ही साँस में, स्त्रियों से अधीन रहने को कहा गया है। उस समय की स्त्रियाँ वैसे भी पदानुक्रम के अनुसार अधीन थीं। उनके लिए ऐसी आज्ञा कोई नई या अजीब बात नहीं थी। उस समय यह सांस्कृतिक और सामाजिक सहमति थी। यदि वे तब तक शायद विवश होकर अधीन रहती थीं, तो अब वे यीशु की चेलिनों के रूप में उसकी सामर्थ्य में और हृदय से ऐसा कर सकती थीं।

प्रेरित उस समय के प्राचीन जगत के लिंग-भूमिका संबंधों के विरुद्ध न लिखते हैं और न काम करते हैं। एक ओर वे स्त्री की अधीनता की पुष्टि करते हैं, दूसरी ओर – और यह नया है – वे पुरुषों से प्रेम और देखभाल भरे व्यवहार की माँग करते हैं। **पुरुषों को यह निर्देश नहीं दिया जाता कि वे अगुवाई करें, शासन करें या प्रभुता करें, या अधीनता की माँग भी करें।**

प्राचीन घराने की व्यवस्था के लिए वे निर्देश, जिन्हें लूथर ने "घरेलू नियम-पट्टिकाएँ" (Haustafeln) कहा, **उस समय की सामाजिक व्यवस्थाओं को भीतर से खोखला कर देते हैं, क्योंकि सुसमाचार और मसीह का प्रेम अक्सर कठोर और हिंसक संबंधों को बदल देता है।** इसलिए सुसमाचार के साथ सब कुछ रातोंरात नहीं बदल जाता, बल्कि सोच बदलने और व्यवहार बदलने की एक प्रक्रिया आरंभ होती है। उसके अंत में उदाहरण के लिए दासप्रथा का अंत आता है, जिसकी माँग प्रेरितों ने नहीं की थी, परन्तु जो सुसमाचार के मूल में पहले से निहित था।

"मसीही" अधीनता (अर्थात् संगी विश्वासियों के बीच अधीनता, विश्वासी पतियों और पत्नियों सहित) **नम्र, निष्ठावान और प्रेमपूर्ण आदर, सहयोग और समर्थन है।** नम्रता और कोमलता की तरह अधीनता एक सामान्य मसीही चरित्र-गुण होना चाहिए। और आदर्श रूप से यह परस्पर होनी चाहिए।

इसका क्या अर्थ है कि पुरुष स्त्री का सिर है (1 कुरिन्थियों 11:3)? जैसा हम अपनी जर्मन भाषा में अनुमान लगाते (जर्मन शब्द "Haupt" = सिर, "Oberhaupt" = मुखिया), उसके विपरीत इसका अर्थ "मुखिया" नहीं है, जो आगे चलता है, अगुवाई करता है, प्रभुता करता है या शासन करता है। जब पौलुस ने यह रूपक प्रयोग किया, तब इसका अर्थ था **स्रोत और उद्गम**। इस प्रकार स्त्री पुरुष में से ली गई थी (11:8) और इसलिए उसे पुरुष का आदर करना था। स्त्री के सिर के रूप में पुरुष उसका शासक नहीं, उसका अगुवा नहीं, बल्कि उसका उद्धारकर्ता है, जो उससे प्रेम करता है, उसकी रक्षा करता है, उसका भरण-पोषण करता है और उसकी देखभाल करता है (इफिसियों 5:21-33)। सिर का रूपक स्त्री और पुरुष की प्रेमपूर्ण एकता को और साथ ही मसीह के अनुरूप उसकी देह के भरण-पोषण को चित्रित करता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है: धर्मनिरपेक्ष यूनानी शब्दकोश, यूनानी बाइबल और पौलुस का भाषा-प्रयोग दिखाते हैं कि पौलुस ने "सिर" से "अधिकार" का अर्थ नहीं लिया। **बाइबल कहीं भी स्त्री के संबंध में पुरुष की सर्वोच्चता या अगुवाई की भूमिका नहीं सिखाती।**

सेप्टुआजिंट (सप्तति अनुवाद), जो इब्रानी का यूनानी में अनुवाद करता है, जहाँ इब्रानी में सिर का अर्थ अगुवा, नेता, शासक है, वहाँ kephale शब्द नहीं, बल्कि कोई दूसरा शब्द प्रयोग करता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि kephale का अर्थ इस दिशा में संकेत नहीं करता।

इस्राएल के पुरुष याजक और यीशु के 12 चेले

केवल पुरुष याजक और 12 पुरुष चेले मेरे लिए केवल पुरुषों की अगुवाई के पक्ष में एक प्रबल तर्क थे।

इस्राएल में केवल पुरुष याजक थे। परन्तु मुझे यह पहचानना पड़ा कि परमेश्वर की इच्छा और मनसा यह थी कि **सब, पुरुष और स्त्रियाँ दोनों,** याजक हों:

> "और **तुम** मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बातें तुझे इस्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही हैं। (निर्गमन 19:6)

भविष्य के लिए भी इसकी भविष्यद्वाणी की गई है:

> "तुम यहोवा के याजक कहलाओगे; लोग तुम्हें हमारे परमेश्वर के सेवक कहेंगे।" यशायाह 61:6

पुराने नियम में ऐसा क्यों नहीं हुआ, यह कहना कठिन है: एक कारण यह हो सकता है कि लेवीय याजकपद को उन समर्पित स्त्रियों के, अर्थात् कनानी मूर्तिपूजक पंथों की पुजारिनों और वेश्याओं के विरोध में खड़ा होना था।

> "इस्राएली स्त्रियों में से कोई देवदासी न हो, और न इस्राएलियों में से कोई पुरुष ऐसा बुरा काम करने वाला हो।" व्यवस्थाविवरण 23:17

याजक की सेवा, जब वह लेवीय बलिदान-विधि में होती थी, भारी शारीरिक परिश्रम का काम था, कसाई के काम के समान। औसतन पुरुष (हमेशा की तरह अपवादों को छोड़कर) स्त्रियों से शारीरिक रूप से अधिक बलवान होते हैं।

बिना किसी सीमा के यह बात लागू होती है कि नई वाचा में परमेश्वर से जन्मा हर व्यक्ति एक याजक है। इसलिए पुराने नियम की ओर पीछे देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता कि लिंग वह कारण था जिससे केवल पुरुष याजक थे। (इब्रानियों 2 – 10; 1 पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 1:6; 5:10)।

12 चेले केवल यहूदी पुरुषों के रूप में ही याकूब के 12 पुत्रों या इस्राएल के 12 गोत्रों का प्रतिनिधित्व कर सकते थे। वे पुरानी वाचा से नई वाचा तक के अनोखे संक्रमण के प्रतीक हैं।

आज अगुवों और अध्यक्षों का यहूदी पुरुष होना आवश्यक नहीं है: जो कोई भी अगुवा बनने की इच्छा रखता है, वह आमंत्रित है, अन्यजातियों के पुरुष भी। यहूदी पुरुषों के रूप में 12 प्रेरितों का अर्थ अगुवाई के कार्यों से स्त्रियों का बहिष्कार नहीं है। यूनिया, एक स्त्री, को पौलुस ने प्रेरित कहा है (रोमियों 16:7), ठीक वैसे ही जैसे बरनबास को प्रेरित कहा गया (प्रेरितों के काम 14:14)।

प्राचीनों और अध्यक्षों की योग्यताएँ

क्या शायद इफिसुस की वह स्त्री (या वे स्त्रियाँ), जिसे शिक्षा-प्रतिबंध संबोधित है, अध्यक्ष बनना चाहती थी? हमारा अध्याय-विभाजन 1 तीमुथियुस 3:1 को इस प्रकार आरंभ करता है:

> यह बात सत्य है: यदि **कोई** अध्यक्ष की सेवा की इच्छा रखता है, तो वह एक अच्छे काम की लालसा करता है।

ऐसा लगता है कि पौलुस इस स्त्री (या इन स्त्रियों) के लिए यह संभावना निश्चय ही देखता है कि वे अध्यक्ष बन सकती हैं, यदि वे आगे दी गई योग्यताओं को पूरा करें। पहला कदम यह होगा कि वे शांति और अधीनता में सीखें और बाहरी रूप-रंग में संयमी रहें। इफिसुस की धनी स्त्रियों को अनुचित व्यवहार करने (2:9) के बजाय **अच्छे काम** करने थे (2:10)। अध्यक्ष के पद का उल्लेख करने के लिए पौलुस एक मिलती-जुलती अभिव्यक्ति का प्रयोग करता है: यदि कोई प्राचीन पद की आकांक्षा करता है, तो वह एक **अच्छे काम** की लालसा करता है (3:1)। प्राचीन पद एक अच्छा काम है, जिसकी आकांक्षा ये स्त्रियाँ कर सकती थीं, यदि वे उसके लिए योग्य बन जातीं।

परन्तु क्या पौलुस 3:1-7 में केवल पुरुषों को संबोधित नहीं करता? नहीं, निश्चय ही नहीं। "**कोई**" (यूनानी tis) एक लिंग-निरपेक्ष शब्द है। इसका अर्थ हो सकता है: **यदि वह (स्त्री) या यदि वह (पुरुष)** अध्यक्ष की सेवा की इच्छा रखे। **क्या पौलुस स्त्रियों को ऐसे पद की आकांक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करेगा जो उनके लिए वर्जित है?** पौलुस यह स्पष्ट करता है कि "कोई/हर कोई" अक्सर उसका विषय है, क्योंकि वह पद 5 में "कोई/हर कोई" को दोहराता है, और इसी प्रकार तीतुस 1:6 में अध्यक्ष की योग्यताओं की समानांतर सूची में भी। **1 तीमुथियुस 3:1-13 या तीतुस 1:5-9 में कलीसियाओं के अगुवों की योग्यताओं में एक भी पुल्लिंग सर्वनाम नहीं है। परन्तु यह जर्मन अनुवादों से स्पष्ट नहीं होता।**

परन्तु तब "**एक ही पत्नी का पति**" योग्यता का क्या? यह शब्द-रचना, ऐसा सोचा जाएगा, केवल पुरुषों पर ही लागू हो सकती है। नहीं, क्योंकि पूरे वाक्यांश को एक **मुहावरे** के रूप में समझना होगा। कुछ लोग एक शब्द, अर्थात् "पति/पुरुष", निकाल लेते हैं और उसे मनमाने ढंग से संदर्भ से अलग कर देते हैं, ताकि उससे एक नई शर्त निकालें – अर्थात् यह कि हर अध्यक्ष को "पुरुष" होना चाहिए। परन्तु अधिकांश बाइबल-व्याख्याकार, पूरकतावादी भी, "एक पत्नी का पति" को इस अर्थ में समझते हैं कि **बहुविवाह करने वाले या यौन रूप से अविश्वासी पुरुष** अध्यक्ष के कार्य से बाहर रखे गए हैं।

इस मुहावरे में दोहरा अर्थ पढ़ना, अर्थात् बहुविवाह करने वालों का बहिष्कार भी और यह सार्वभौमिक शर्त भी कि अध्यक्ष पुरुष ही हों, अनुचित है और यह अध्यक्षों के लिए पौलुस की अधिकांश अन्य बहुअर्थी शर्तों को बेतुका बना देगा। क्या सब अध्यक्षों का दासों सहित "अपना घराना" और कई "बच्चे" होने चाहिए, जो इतने बड़े हों कि "विश्वास" कर सकें और "पूरी गंभीरता के साथ" अधीन रहें?

क्योंकि 1 तीमुथियुस 3:11 में स्त्री सेवकों (डीकनों) की योग्यताएँ बताई गई हैं, इसलिए 3:12 में सेवकों की शर्तों में वही अभिव्यक्ति "एक पत्नी का पति" स्त्रियों को बाहर नहीं कर सकती।

एकविवाह का सिद्धांत, जो "एक पत्नी का पति" में व्यक्त होता है, पुरुषों और स्त्रियों पर समान रूप से लागू होता है, ठीक वैसे ही जैसे "तू अपने पड़ोसी की पत्नी का लालच न करना" (निर्गमन 20:17) उस पुरुष या स्त्री पर समान रूप से लागू होता है जो अपने पड़ोसी के जीवनसाथी का लालच करे। इसलिए "एक पत्नी का पति" का सबसे सटीक अनुवाद "**एकविवाही**" है, क्योंकि वह पुल्लिंग रूपों के लिए यूनानी मुहावरे के व्यापक अर्थ को सबसे अच्छी तरह व्यक्त करता है।

ऐसा कोई प्रेरितीय निर्देश नहीं है जो स्त्रियों को अध्यक्ष का पद वर्जित करे (जैसे, उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों 14:34-35 में चुप्पी की आज्ञा)।

तब, यदि यह प्रश्न पहली शताब्दी में उठा होता, तो किस बात को आधार मानना चाहिए था, या किस बात पर टिके रहना चाहिए था? यदि पुराने नियम में ही पुरुषों द्वारा अगुवाई के अपवाद थे, यदि व्यापक अर्थ में समाज में भी अपवाद थे, यदि स्त्रियों के प्रति यीशु और प्रेरितों का दृष्टिकोण प्रचलित संस्कृति से अधिक सकारात्मक था, और यदि स्त्रियाँ आत्मा के वरदान पाती और उनका प्रयोग करती थीं, या अपने घरों में घरेलू कलीसियाएँ इकट्ठी करती थीं, तो यह मानने का कोई आधार नहीं था कि कलीसियाओं में अगुवाई स्त्रियों के लिए वर्जित थी।

पुरुषों और स्त्रियों की समानता के पक्ष में तर्क, शिक्षा देने और अगुवाई में भी:

यदि कोई एक बार लिंग-प्रश्न में पवित्र शास्त्र के पास तटस्थ होकर या परिणाम के प्रति खुले मन से जाने का प्रयास करे, तो वह विभिन्न पहलुओं में समानता पाएगा। शिक्षा देने और अगुवाई के विषय को पूरे पवित्र शास्त्र के प्रकाश में देखना होगा, न कि एक या दो छोटे पाठों के द्वारा निर्धारित या सीमित किया जाना चाहिए।

सृष्टि का वृत्तांत मेरे लिए एक नई खोज था, जिसने मुझे अपनी सोच बदलने के लिए प्रेरित किया और यह तय करने में निर्णायक मोड़ बना कि मुझे इस विषय पर नए नियम के पाठों को भी कैसे पढ़ना है। इसलिए हम बिलकुल आरंभ से शुरू करते हैं:

सृष्टि पर आधारित तर्क

दोनों लिंगों पर एक ही बात लागू होती है: दोनों परमेश्वर का स्वरूप धारण करते हैं और दोनों को फलवन्त होना और प्रभुता करनी है। आदिम अवस्था में कोई क्रम या पदानुक्रम नहीं है, न ही कार्यों या भूमिकाओं का बँटवारा।

> "फिर परमेश्वर ने कहा, हम **मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ**; और **वे प्रभुता करें** समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं! तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने उनकी सृष्टि की। और **परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और परमेश्वर ने उनसे कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो!"** उत्पत्ति 1:26-28

हव्वा की सृष्टि का प्रभावशाली वर्णन किया गया है। उसकी सृष्टि क्यों की गई?

> "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिए **एक सहायक** बनाऊँगा **जो उसके अनुरूप हो**।" उत्पत्ति 2:18 (Elberfelder (जर्मन बाइबल अनुवाद); फुटनोट: उसके **आमने-सामने के साथी** के रूप में, उसके अनुरूप जैसा)
>
> Einheitsübersetzung: मैं उसके लिए एक सहायक बनाऊँगा, **जो उसके बराबर का हो**।
>
> Gute Nachricht: मैं एक ऐसा प्राणी रचूँगा जो उसकी सहायता करे और **जो उसके लिए उपयुक्त हो**।
>
> Zürcher Bibel: मैं उसके लिए एक सहायक बनाऊँगा, **उसके योग्य**।

"एक सहायक जो उसके अनुरूप हो" – इब्रानी में "ezer kenegedo" – का ठीक-ठीक क्या अर्थ है?

> **ʿēzer = "शक्ति, सहायता, बचाने वाला, बचाने वाली, रक्षक, सामर्थ्य"**
>
> पुराने नियम में 16 बार "परमेश्वर हमारा सहायक है", 3 बार किसी सैनिक रक्षक के लिए; इसलिए यह कभी भी कोई अधीन बात नहीं, बल्कि इसके विपरीत, संभवतः कोई श्रेष्ठ बात है।
>
> **kĕnegĕdô: kĕ = रूप में/जैसा + negĕd = सामने + ô = उसके "जैसे उसके सामने"**
>
> शाब्दिक रूप से यह अभिव्यक्ति बताती है: "उसके सामने जैसी एक शक्ति"
>
> बोलचाल की भाषा में इसका अर्थ है: "एक ऐसी शक्ति जो उसके अनुरूप हो"

सहायक के रूप में स्त्री किसी अधीनस्थ का वर्णन नहीं करती, न ही किसी अधीनता या पदानुक्रम की नींव डालती है। बल्कि आदम को एक आत्मीय साथी की आवश्यकता है। एक सहयोगी की। एक साझेदार की। एक आमने-सामने के साथी की, एक पूरक की। अपने अस्तित्व के हर पहलू का एक प्रतिरूप: शारीरिक, भावनात्मक, आत्मिक, मानसिक; बाहरी भी और भीतरी भी। संक्षेप में, "एक सहायक जो उसके अनुरूप हो" का यही अर्थ है।

पौलुस भी स्त्री और पुरुष की सृष्टि को ध्यान में रखते हुए सारांश देता है: "तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष के और न पुरुष बिना स्त्री के है।" 1 कुरिन्थियों 11:11

पतन से पहले की सृष्टि की व्यवस्था स्त्री और पुरुष को समान दर्जे और समान अधिकार वाला देखती है। कोई पदानुक्रम नहीं है। वह हो भी नहीं सकता था, क्योंकि वह पतन के बाद ही आरंभ होता है:

> "फिर स्त्री से उसने कहा: ... और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, **और वह तुझ पर प्रभुता करेगा**।" उत्पत्ति 3:16

यह पतन के परिणामों का वर्णन है। स्त्री पर पुरुष की प्रभुता सृष्टि में परमेश्वर की इच्छा नहीं थी। यह प्रभुता पापमय है। आज तक का इतिहास इस त्रासदी को प्रभावशाली रूप से प्रमाणित करता है। इसमें कुछ भी अच्छा नहीं, इसमें कुछ भी आत्मिक नहीं। **यह सृष्टि की व्यवस्था नहीं, बल्कि पतन के परिणाम के रूप में सृष्टि की अ-व्यवस्था है।** एक पतित सृष्टि में बलवान की प्रभुता। इसलिए हमें पुरुष की इस एकतरफ़ा प्रभुता का समर्थन नहीं करना चाहिए, तब भी नहीं जब उसे मसीही रंग दे दिया गया हो और नए नियम में पढ़कर डाल दिया जाता हो (आइसेजेसिस – पाठ में अपना अर्थ डालना)।

ऐतिहासिक तर्क

इस्राएल का इतिहास और नए नियम का इतिहास, और कलीसिया का इतिहास भी, बिना संदेह दिखाते हैं कि स्त्रियाँ शिक्षा दे सकती हैं और अगुवाई कर सकती हैं, उन्हें इसकी अनुमति है और उन्हें ऐसा करना चाहिए। इन स्त्रियों का इन कार्यों में बिलकुल स्वाभाविक रूप से वर्णन किया गया है। कहीं भी इसे अपवाद नहीं कहा गया, मानो परमेश्वर अपनी ही स्थापित की हुई किसी व्यवस्था को अस्थायी रूप से निलंबित कर रहा हो, क्योंकि पुरुष उपलब्ध नहीं थे।

पुराने नियम में स्त्रियाँ

भविष्यद्वक्तिन मरियम को परमेश्वर ने इस्राएल की अगुवाई करने के लिए भेजा (मीका 6:4; तुलना करें निर्गमन 15:20-21)। परमेश्वर स्वयं मीका 6:4 में कहता है: "मैं तो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया, और दासत्व के घर में से तुझे छुड़ा लाया; और तेरी अगुवाई करने को मूसा, हारून और मरियम को भेज दिया।"

इस प्रकार परमेश्वर ने स्वयं एक स्त्री को भी अपने लोगों के आगे-आगे भेजा! पुरुषों की कोई कमी नहीं थी, मूसा और हारून तो वहाँ थे ही; यह उसकी इच्छा थी कि इस अगुवाई-दल में एक स्त्री हो।

दबोरा उन न्यायियों में से एक है जिन्हें "यहोवा ने उठाया" और जिन्होंने "इस्राएल को उसके शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया" (न्यायियों 2:16, 18; 4:10, 14, 24; 5:1-31); वह एक भविष्यद्वक्तिन और पूरे इस्राएल की सर्वोच्च अगुवा थी (4:4-5)। उसे, जो पत्नी और माता थी (4:4; 5:7), इस्राएल के सैनिक सेनापति बाराक को आदेश देने का अधिकार था: "जा!" (4:6, 14), और वह गया। वे साझा अधिकार के साथ अच्छी तरह मिलकर काम करते थे: वह सैनिक सेनापति के रूप में, वह **सर्वोच्च सेनापति** के रूप में।

रानी एस्तेर के पास इतना प्रभाव था कि वह यहूदियों के 75,000 शत्रुओं सहित हामान के घराने का विनाश करा सकी (एस्तेर 7:1-10; 9:1-32)। मोर्दकै के साथ मिलकर "उसने पूरे अधिकार के साथ लिखा ..... एस्तेर की आज्ञा ने इन नियमों की पुष्टि की" (9:29-32)।

व्यवस्था की खोई हुई पुस्तक मिलने पर याजकों ने **भविष्यद्वक्तिन हुल्दा** से परामर्श लिया और उसके आत्मिक मार्गदर्शन के अधीन हो गए। इस्राएल के अगुवों ने, जिनमें राजा, पुरनिये, नबी और लोग शामिल थे, उसके वचन को परमेश्वर का प्रकट किया हुआ वचन मानकर स्वीकार किया (2 राजाओं 22:14-23:3; 2 इतिहास 34:22-32)। एक स्त्री के द्वारा बोले गए परमेश्वर के वचन के प्रति इस्राएल के पुरुष-नेतृत्व की आज्ञाकारिता ने संभवतः इस्राएल के इतिहास के सबसे बड़े जागरण को जन्म दिया (2 राजाओं 22:14-23:25; 2 इतिहास 34:29-35:19)।

यशायाह की पत्नी एक **भविष्यद्वक्तिन** थी: "और मैं **भविष्यद्वक्तिन** के पास गया, और वह गर्भवती हुई और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। तब यहोवा ने मुझसे कहा, उसका नाम 'महेर्शालाल्हाशबज' (लूट जल्दी होती है, छीन-झपट शीघ्र आती है) रख।" यशायाह 8:3

पुराने नियम का एक भी पाठ यह नहीं कहता कि परमेश्वर ने स्त्रियों को केवल विशेष परिस्थितियों के कारण पुरुषों पर ऐसा राजनीतिक या धार्मिक अधिकार चलाने की अनुमति दी, और न ही इन घटनाओं को किसी बाइबलीय सिद्धांत के अपवादों के रूप में वर्णित किया गया है।

नए नियम में स्त्रियाँ

यीशु के साथ प्राचीन यहूदी धर्म के लिंग-प्रश्न में मानवीयता का एक नया आयाम आता है। उसकी माता एक भविष्यद्वक्तिन बनती है और उसका स्तुतिगान (मैग्निफ़िकट) प्रेरित शास्त्र बन जाता है (लूका 1), जैसे पहले हन्ना का स्तुतिगान (1 शमूएल 2:1 आदि)। यीशु के पास स्त्रियाँ आदर और महत्व पाती हैं; वह बिना भेदभाव के उनकी ओर ध्यान देता है, उन्हें ऊँचा उठाता है; उसके पास वे सीख सकती हैं और उन्हें सीखना चाहिए, उसकी शिष्याएँ बन सकती हैं। कुछ अपवादों को छोड़कर यह वास्तव में एक वर्जना को तोड़ना था।

एक स्त्री पर, जिसने अपना सारा आत्म-सम्मान खो दिया था, उसने स्वयं को मसीहा के रूप में प्रकट किया। वह उससे ऐसे शब्द सुनती है जो इससे पहले कभी किसी ने नहीं सुने थे। इस भेंट के परिणाम हुए: पहली मसीही मिशनरी एक **सामरी स्त्री** थी: "उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री की गवाही के कारण उस पर विश्वास किया" (यूहन्ना 4:39; तुलना करें 4:28-42)।

चेलिनें थीं (लूका 8:1-3), जैसे उदाहरण के लिए मरियम, जो यीशु के चरणों में बैठकर सीखती है, ताकि बाद में उसे आगे भी पहुँचाए – और इस प्रकार ठीक वही करे जिसका आदेश यीशु मत्ती 28 में चेलों को देता है, अर्थात् बपतिस्मा देना और सिखाना।

पहला व्यक्ति, जिसके पास पुनर्जीवित मसीह गया और जिसे उसने अपने पुनरुत्थान और अपने निकट आने वाले स्वर्गारोहण का सुसमाचार सुनाने का कार्य सौंपा, **मरियम मगदलीनी** थी (यूहन्ना 20:14-18)। क्योंकि "प्रेरित" का अर्थ "भेजा हुआ" है, इसलिए यह कहना उचित है कि मसीह ने उसे **प्रेरितों की प्रेरित** नियुक्त किया। चेलों पर प्रकट होने से पहले यीशु ने एक स्त्री के द्वारा उन्हें अपने पुनरुत्थान का समाचार पहुँचवाया। वह बिना किसी कठिनाई के तुरंत स्वयं भी उन पर प्रकट हो सकता था। परन्तु वह इसके द्वारा उन्हें यह सिखाना चाहता था: तुम पुरुषों को एक स्त्री की गवाही पर उतना ही विश्वास करना चाहिए जितना एक पुरुष की गवाही पर, क्योंकि मैंने उसे भेजा है! उद्धार का एक नया युग आरंभ होने ही वाला था!

मसीह के लिए अगुवाई, जिसे उसने नम्र, सेवा करने वाली अगुवाई के रूप में नए सिरे से परिभाषित किया (उदाहरण के लिए यूहन्ना 13:3-17), स्त्रियों के लिए कम से कम उतनी ही उपयुक्त है जितनी पुरुषों के लिए।

रोमियों 16:1-16 में पौलुस दस व्यक्तियों को नाम लेकर नमस्कार कहता है, जिन्हें वह मसीही सेवा में सहकर्मी कहता है। **इन दस व्यक्तियों में से सात स्त्रियाँ हैं**:

फीबे, "किंख्रिया की कलीसिया की सेविका (डीकन)" (16:1) और "बहुतों की, और मेरी भी, संरक्षिका/अगुवा[2]" (16:2);

यूनिया, "प्रेरितों में प्रमुख" (16:7); जो अपने पति के साथ सुसमाचार के प्रचार के कारण पौलुस के साथ बंदीगृह में थी।

प्रिस्का, "मसीह यीशु में मेरी सहकर्मी" (16:3; तुलना करें फिलिप्पियों 4:3);

और **मरियम, त्रूफैना, त्रूफोसा और पिरसिस** "प्रभु में बहुत परिश्रम करती थीं" (16:6, 12)।

1. कुरिन्थियों 16:16 विश्वासियों से कहता है कि वे "**हर एक सहकर्मी के अधीन रहें**"। 1 थिस्सलुनीकियों 5:12 में **"जो तुम्हारे बीच परिश्रम करते हैं"** उन्हें **"जो प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं"** कहा गया है। यहाँ उन लोगों की बात है जिन पर अगुवाई का उत्तरदायित्व है! इस बात पर जितना ज़ोर दिया जाए उतना कम है कि पौलुस इन स्त्रियों को केवल विश्वासियों के रूप में नहीं गिनाता, बल्कि सेवा में अगुवों के रूप में। इस खंड में पौलुस बहुत से विश्वासियों को नमस्कार कहता है, परन्तु केवल दस व्यक्तियों को सहकर्मी, अर्थात् अगुवे, कहता है, और उनमें से सात स्त्रियाँ हैं। तीन पुरुष अक्विला, अन्द्रुनीकुस और उरबानुस हैं। पहले दो का नाम उनकी पत्नियों के साथ लिया गया है, जो उनके साझा अधिकार को रेखांकित करता है।

यह बात कि पौलुस किसी सार्वजनिक समुदाय के अगुवों में स्त्रियों का इतना ऊँचा अनुपात बताता है, प्राचीन यूनानी साहित्य के पूरे इतिहास में अनोखी है। यह आरंभिक कलीसिया में स्त्रियों की अगुवाई के ऐसे महत्व की ओर संकेत करती है जो उस समय की संस्कृति के लिए असाधारण था।

सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस की चार बेटियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि योएल की प्रतिज्ञा पिन्तेकुस्त पर पूरी हुई, बेटियों के लिए भी:

> "दूसरे दिन हम वहाँ से चलकर कैसरिया में आए, और फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक के घर में, जो सातों में से एक था, जाकर उसके यहाँ रहे। उसकी **चार कुँवारी बेटियाँ थीं, जो भविष्यद्वाणी करती थीं**।" प्रेरितों के काम 21:8-9

यह संभावित है, यद्यपि अनिवार्य नहीं, कि नुमफास (Nympha) कलीसिया के अगुवों में से थी, क्योंकि उसने लौदीकिया की कलीसिया के लिए अपना घर उपलब्ध कराया था:

> "लौदीकिया के भाइयों को और **नुमफास** को और उसके घर की कलीसिया को नमस्कार कहना।" कुलुस्सियों 4:15

पौलुस फिलिप्पी में दो स्त्रियों का उल्लेख करता है जिनमें आपस में मतभेद था। निश्चय ही वे ऐसी सेवाओं में सक्रिय थीं जो कलीसिया के लिए महत्वपूर्ण थीं, अन्यथा पौलुस उन दोनों को सीधे नाम लेकर संबोधित नहीं करता।

> "मैं **यूओदिया** को भी समझाता हूँ और **सुन्तुखे** को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें। हाँ, हे सच्चे सहकर्मी, मैं तुझ से भी विनती करता हूँ कि तू उनकी सहायता कर, क्योंकि उन्होंने सुसमाचार फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया, फिलिप्पियों 4:2-3

जब पौलुस अभी मसीह में नहीं था और कलीसिया को सताता था, तब, जैसा लूका दो बार बताता है, उसका निशाना पुरुष **और** स्त्रियाँ दोनों थे, ताकि उन्हें बंदीगृह में डाले (प्रेरितों के काम 8:3; 9:2)। स्त्रियाँ भी क्यों? सदा अगुवों को ही हटाया जाता है; झुंड की साधारण भेड़ों में कम या बिलकुल रुचि नहीं होती। आज तक उन देशों में ऐसा ही किया जाता है जहाँ मसीहियों को सताया जाता है।

और स्त्रियाँ

अभी इतना समय नहीं है कि उस बहुत बड़े क्षेत्र में प्रवेश करें कि स्त्रियों ने आरंभिक कलीसिया में, मध्य युग में, धर्मसुधार (रिफ़ॉर्मेशन) में और जागरण-आंदोलनों में क्या-क्या किया। हज़ारों स्त्रियों ने शिक्षा दी और अगुवाई की, और उनके बिना संभवतः आज मसीही जगत कुछ और दिखाई देता। बहुतों के नाम ज्ञात हैं। स्त्री प्राचीन भी थीं, और वैसे ही प्रचारिकाएँ और शिक्षिकाएँ भी।

अक्सर यह भी भुला दिया जाता है कि स्त्रियों ने केवल वचन के द्वारा ही नहीं, बल्कि अपने लेखन के द्वारा भी शिक्षा दी और अगुवाई की। प्रसिद्ध गीत-रचयिताएँ और लेखिकाएँ हैं, जिन्होंने मसीही कलीसिया के इतिहास पर गहरी छाप छोड़ी है

यह सच है कि पुरुषों की तुलना में वे कुल मिलाकर अल्पसंख्या में थीं। इसका कारण उस समय की सांस्कृतिक स्थिति है, जिसमें स्त्रियाँ सदा और सर्वत्र कमोबेश वंचित रहती थीं और उन्हें सार्वजनिक रूप से सामने नहीं आना था। ठीक यही उत्पत्ति 3:16 की छाया में सांसारिक संस्कृति और संस्कार है। इसका परमेश्वर के राज्य से, उससे जो अब मसीह में वास्तविकता बन गया है, कोई संबंध नहीं।

उद्धार-शास्त्रीय (सोटेरियोलॉजिकल) तर्क – मसीह में उद्धार

जो कोई प्रभु को पुकारेगा और उस पर भरोसा रखेगा, उद्धार पाएगा। यही सुसमाचार का शुभ संदेश है। उद्धार, छुटकारा और अनंत जीवन बिना किसी अपवाद के सब के लिए खुले हैं। पौलुस गलातियों को अध्याय 3:26, 27 में लिखता है:

> "**क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर के पुत्र [बन गए] हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।"**

परमेश्वर का पुत्र बनने का विशेषाधिकार पुरुषों और स्त्रियों दोनों पर लागू होता है। पौलुस की शब्दावली में स्त्रियाँ भी "परमेश्वर के पुत्र" बन जाती हैं। निश्चय ही स्त्रियों के रूप में वे परमेश्वर की बेटियाँ भी हैं, परन्तु यहाँ पौलुस उस सामाजिक दर्जे पर ज़ोर देता है जो रोमी साम्राज्य में पुत्रों को प्राप्त था: यह विशेषाधिकार अब परमेश्वर के साथ संबंध में सब को मिलता है, स्त्रियों को भी।

इसके साथ यह भी जुड़ता है, विशेषकर स्त्रियों के लिए, कि परमेश्वर का पुत्र बन जाने के चिह्न के रूप में खतना नहीं, जो उनके लिए असंभव था, बल्कि जल का बपतिस्मा ठहराया गया है।

इसके बाद पौलुस एक ऐसा कथन जोड़ता है जिसका उस समय की परिस्थितियों के लिए विस्फोटक प्रभाव था। **वह एक बार फिर यह आश्वासन नहीं देता कि मसीह में सब उद्धार पा सकते हैं, क्योंकि यह वह कई स्थानों पर पहले ही कर चुका है। उसका लक्ष्य यह है कि मसीह में राष्ट्रीय, सामाजिक और लैंगिक भेद अब कोई भूमिका नहीं निभाते**:

> **"अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर और नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।"** गलातियों 3:28

गलातियों 2:11-3:28 में पौलुस ज़ोर देता है कि कलीसिया में किसी सामाजिक समूह के साथ, स्त्रियों सहित, असमान व्यवहार सुसमाचार के विरुद्ध है। वह यहूदी मसीहियों की, प्रेरित पतरस सहित, कड़ी निंदा करता है, क्योंकि वे अन्यजाति मसीहियों के साथ बराबर का व्यवहार नहीं करते, और उनके साथ एक मेज़ पर भोजन करने से भी इनकार करते हैं। पौलुस तर्क देता है कि जातीय पहचान या सामाजिक स्थिति या लिंग के आधार पर कलीसिया में दर्जा या विशेषाधिकार बाँटना सुसमाचार के विरुद्ध है। सब मसीहियों के उद्धार की पहचान केवल मसीह में आधारित है!

क्योंकि ये सब सामाजिक श्रेणियाँ हैं और "मसीह यीशु में" का संबंध कलीसिया से है (**1:22**), इसलिए गलातियों 3:28 का सबसे स्पष्ट प्रयोग कलीसिया में सामाजिक संबंधों पर है। **यह खंड उद्धार को कलीसिया के सामाजिक जीवन से अटूट रूप से जोड़ता है।** पौलुस के सब लेखों की तरह मसीह में छुटकारे को मसीह की देह में जीवन से अलग नहीं किया जा सकता। पौलुस द्वारा इन भेदों को अस्वीकार करने का परिणाम इसका विपरीत होना ही चाहिए, अर्थात् कलीसिया के व्यावहारिक जीवन में इन सब समूहों के समान दर्जे की पुष्टि, क्योंकि वे सब मसीह में एक हैं।

ये तीनों मानव-समूह मसीही होकर भी निश्चय ही वही **बने रहते** हैं, जिसमें वे जन्मे थे (शायद दासों को छोड़कर, जो स्वतंत्र हो सकते हैं)। परन्तु उस समय के और आज के संसार की परंपराएँ, बहिष्कार और भेदभाव कलीसिया में, नई सृष्टि में, अब लागू नहीं होते। जहाँ तक स्त्री और पुरुष का संबंध है, उनका मूल-सृष्टि वाला संबंध मसीह में फिर से स्थापित हो गया है। साधारण दास और दासियाँ भी कलीसिया में शिक्षक और अगुवे हो सकते थे, परन्तु कलीसिया के बाहर अपनी सामाजिक परिस्थितियों में नहीं।

गलातियों 3:28 का एक निकट समानांतर 1 कुरिन्थियों 11:11 है:

> **"तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष के कुछ है, और न पुरुष बिना स्त्री के।"**

पौलुस यह बात इस पुष्टि के संदर्भ में कहता है कि स्त्रियाँ भी पुरुषों की तरह कलीसिया की सार्वजनिक सभाओं में सबसे महत्वपूर्ण गतिविधियों की अगुवाई कर सकती हैं – प्रार्थना (आराधना का ऊर्ध्वाधर आयाम – परमेश्वर से बोलना) और भविष्यद्वाणी (आराधना का क्षैतिज आयाम – मनुष्यों से बोलना) – जब तक वे इसे ऐसे ढंग से करती हैं

जो विवाह और मसीही नैतिकता का इनकार न करे। **परिणामस्वरूप "प्रभु में" पुरुषों और स्त्रियों के बीच विभाजन का यह निषेध कम से कम कलीसिया की अगुवाई की इन गतिविधियों पर अवश्य लागू होना चाहिए।**

उद्धार का यह तथ्य कि कलीसिया में राष्ट्रीय, सामाजिक और लैंगिक भेद का अब कोई महत्व नहीं है, पौलुस एक बार फिर 2 कुरिन्थियों 5:16 आदि में बिना किसी अस्पष्टता के व्यक्त करता है:

> "**इसलिए अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे**; और यदि हमने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तौभी अब से उसको ऐसा नहीं जानेंगे। इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया, और मेल-मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है: अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और **उसने मेल-मिलाप का वचन हम में रख दिया है**।"

यदि हम अब किसी को शरीर के अनुसार नहीं जानते, तो लिंग भी महत्वहीन है। केवल मसीह में नई सृष्टि मायने रखती है। और यह नई, परमेश्वर से मेल-मिलाप पाई हुई सृष्टि क्या करती है? वह वह सेवा करती है जो मेल-मिलाप का प्रचार करती है! अर्थात् सब प्रचार करते हैं।

जो लोग मसीह को शरीर के अनुसार परखते थे, उन्होंने शायद सोचा, "यह बढ़ई का बेटा हमें क्या बताना चाहता है?" जो बस सुनते रहे, उन्होंने पहचाना कि वह "अधिकारी के समान" शिक्षा देता था। इसलिए हमें सब मनुष्यों को आत्मिक रूप से परखना सीखना होगा, और जो कुछ पहले हमारी आँखों में खटकता है (सामाजिक स्थिति, रूप-रंग, लिंग), उसे अनदेखा करना होगा।

आत्मिक वरदानों पर आधारित (करिश्माई) तर्क

पवित्र आत्मा स्त्रियों और पुरुषों पर समान रूप से उंडेला गया है। वह हर विश्वासी स्त्री और हर विश्वासी पुरुष को जैसा चाहता है वैसा वरदान देता है। वरदानों (करिश्मा) की सूची में शिक्षा का वरदान और अगुवाई का वरदान शामिल हैं। **किसी भी स्थान पर लिंग के अनुसार भेद नहीं किया गया है।** निम्नलिखित पाठ स्वयं बोलते हैं, पिन्तेकुस्त की घटना से आरंभ करते हुए:

> "परन्तु यह वह बात है जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है: 'परमेश्वर कहता है, अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूँगा, **और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी**, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे। वरन् मैं अपने दासों पर और **अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगी।'"** प्रेरितों के काम 2:16-18

पवित्र आत्मा उन आत्मिक अनुग्रह-वरदानों का दाता भी है, जिनके द्वारा मसीह की देह, अर्थात् कलीसिया, को जीवन दिया जाता है, सँभाला जाता है, दिशा दी जाती है और उसका पोषण किया जाता है। इनमें अगुवाई या प्रधान होने का वरदान भी शामिल है:

> "जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं: यदि भविष्यद्वाणी का हो, तो विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करें; यदि सेवा का हो, **तो सेवा में लगे रहें; यदि कोई सिखाने**

> **वाला हो, तो सिखाने में लगा रहे**; जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देने वाला उदारता से दे; **जो अगुवाई करे, वह उत्साह से करे**; जो दया करे, वह हर्ष से करे।" रोमियों 12:6-8
>
> Zürcher Übersetzung (जर्मन बाइबल अनुवाद): 7 चाहे वह सेवा करने का वरदान हो, **जहाँ सेवा की बात हो; सिखाने का, जहाँ शिक्षा की बात हो**, 8 सांत्वना देने का, जहाँ सांत्वना की बात हो। जो दूसरों को कुछ देता है, वह बिना किसी छिपे उद्देश्य के दे; **जो अगुवाई का कोई कार्य सँभालता है, वह समर्पण के साथ करे**; जो दया करता है, वह प्रसन्न और आनन्दित होकर करे।
>
> "और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग-अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं: प्रथम प्रेरित, **दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक**, फिर सामर्थ्य के काम करने वाले, फिर चंगा करने वाले, और उपकार करने वाले, **और प्रधान (अगुवाई करने वाले)**, और नाना प्रकार की भाषाएँ बोलने वाले।" 1 कुरिन्थियों 12:28

आत्मिक वरदानों पर आधारित तर्क स्वयं बोलता है, स्वयं स्पष्ट है और सबसे सुस्पष्ट है। परमेश्वर ऐसे वरदान क्यों देगा जिन्हें पाने वाला फिर देह की उन्नति के लिए प्रयोग नहीं कर सकता? यह बताना तो अनावश्यक है कि उल्लिखित वरदान स्त्रियों को भी दिए गए हैं। यह एक "व्यवस्था की त्रुटि" होगी, यदि वे ऐसे वरदानों का प्रयोग उस हर ढाँचे में न कर सकें जिसमें परमेश्वर स्त्रियों को रखता है। क्योंकि वरदान सदा कार्य और उत्तरदायित्व भी होते हैं।

क्या होता है जब स्त्रियों के वरदान कलीसिया में कार्य नहीं बन पाते? तब वही होता है जिसका वर्णन पौलुस 1 कुरिन्थियों 12:21 में इस प्रकार करता है: "**आँख** हाथ से **नहीं कह सकती** कि मुझे तेरी आवश्यकता **नहीं**; और न सिर पाँवों से कह सकता है कि मुझे तुम्हारी आवश्यकता **नहीं**।" देह के कुछ अंग, जिन्हें नम्रता से दूसरे अंगों की सेवा को स्वीकार करना चाहिए था, ठीक यही नहीं करते, बल्कि कहते हैं: "हमें तुम्हारी आवश्यकता नहीं।" इस प्रकार स्त्रियाँ निरुत्साहित और आहत होती हैं। वरदान-प्राप्त स्त्रियाँ कलीसिया के बाहर ऐसे कार्य-क्षेत्र खोजती हैं जो उनके वरदानों के अनुरूप हों। इस प्रकार मसीह की देह की प्रभावशीलता घट जाती है। जो परमेश्वर शायद इस बहन के द्वारा हमसे कहना चाहता था, चाहे भविष्यद्वाणी के द्वारा या शिक्षा के द्वारा, वह सुना नहीं जाता। इसका परिणाम यह होता है कि हम केवल स्त्रियों को ही नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर को सीमित कर देते हैं! क्योंकि परमेश्वर स्त्रियों के द्वारा भी उतना ही स्वयं को व्यक्त करता है जितना पुरुषों के द्वारा। हाँ, यह सच है: "आत्मा जिधर चाहता है उधर चलता है।" परमेश्वर का आत्मा मानवीय ढाँचों के द्वारा जहाँ चाहे वहाँ चलने से रोका नहीं जा सकता। परन्तु हम उसे बुझा सकते हैं और शोकित कर सकते हैं। और ऐसा हमने कितनी ही बार किया है!

सारांश

सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र, पुराने नियम में भी और नए नियम में भी, स्त्रियों द्वारा शिक्षा देने और अगुवाई करने को वर्जित **नहीं** करता। जिन पाठों से इसका उलटा निकालना चाहा जाता है, वे स्थानीय बुराइयों का वर्णन करते हैं, जिन्हें दूर किया जाना या रोका जाना था। स्त्रियों ने मसीह से पहले के समय में, मसीही धर्म के आरंभ में और कलीसिया के पूरे इतिहास में शिक्षा दी और अगुवाई की। समझ में आने वाले, सांस्कृतिक, परन्तु बाइबलीय नहीं, कारणों से वे पुरुषों की तुलना में अल्पसंख्या में थीं।

लिंग-न्याय, या कहें बराबर के अधिकार, परमेश्वर के राज्य का एक मूल्य है, जिसे नए सिरे से खोजा जाना चाहिए और परमेश्वर के कार्य के लिए उसकी रक्षा और उसे बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

यदि परमेश्वर की इच्छा यह है कि स्त्रियाँ पुरुषों की तरह शिक्षा दें और अगुवाई करें, परन्तु पुरुष चाहे जिन कारणों और उद्देश्यों से, जानबूझकर या अनजाने में, सदा इसे रोकते रहें, तो क्या यह शरीर के लिए बोया गया बीज है या

आत्मा के लिए?

"न तो 'आधिकारिक' पदों को धारण करने का स्त्रियों का अधिकार, और न ही इन पदों में पुरुषों के साथ उनकी समानता, परमेश्वर और अपने पड़ोसियों के प्रति उनकी सेवा की शर्तें निर्धारित करते हैं। बल्कि यह उनका कर्तव्य है जो ऐसा करता है। और वे कर्तव्य, जो उनकी मानवीय क्षमताओं से उत्पन्न होते हैं, जिन्हें दिव्य वरदानों के द्वारा अधिकार दिया जाता है।" डलास विलार्ड (Dallas Willard)

स्त्री-पुरुष संबंध की मेरी परिभाषा

शब्द के वास्तविक अर्थ में पूरकतावाद का अर्थ है दो समान आकार की, समान शक्ति वाली, समान मूल्य वाली इकाइयों का एक दूसरे को पूरा करना और साथ-साथ चलना। यह बात तब नहीं रहती, जब स्त्री को एक अधीन या दूसरे दर्जे की सहायक माना जाता है, उदाहरण के लिए इसलिए कि वह समय में आदम के बाद और आदम में से बनाई गई थी। परन्तु क्योंकि "पूरकतावाद" शब्द आज की धर्मवैज्ञानिक चर्चा में इसी प्रकार प्रयोग होता है, इसलिए वह बाइबलीय स्त्री-पुरुष संबंध की मेरी परिभाषा के लिए उपयुक्त नहीं है।

परन्तु व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए समानतावाद भी कोई पूरी तरह उपयुक्त शब्द नहीं है, क्योंकि वह फिर लिंगों के उन भेदों को, जो ठीक-ठीक परस्पर पूरकता के विचार की शर्त हैं, कम से कम शब्दों में कमज़ोर कर देता है या अनदेखा कर देता है। बाइबलीय स्त्री-पुरुष संबंध की मेरी समझ संक्षेप में इस प्रकार है:

पूरक समानतावाद

अर्थात् परस्पर पूरकता और साथ-साथ चलना, जो दूसरे को वहाँ बल देता है जहाँ वह निर्बल है, और जिस-में प्रेम और एक दूसरे के अधीन रहने में एकता जी जाती है।

मैंने स्वयं, मेरी पत्नी ने, बहुत सी बहनों और दंपतियों ने पूर्ण समानता के बाइबलीय आधारों को मुक्ति के रूप में अनुभव किया है और यीशु के साथ अपने संबंध को और आपस के संबंधों को एक नए आयाम में जाना है। यह स्वतंत्रता सुसमाचार की स्वतंत्रता का एक स्थायी अंग है। यह एक शुभ संदेश है जब स्त्री होना कोई सीमा और कटौती नहीं, बल्कि उस स्थिति तक ऊँचा उठाया जाना है जो और जैसा परमेश्वर आरंभ से चाहता था।

मेरी पुस्तक का शीर्षक "स्त्रियो, हमें क्षमा कीजिए!" (Frauen, vergebt uns!) सच्चे मन से यह कहना चाहता है कि हम पुरुषों ने – निश्चय ही केवल वे जो इसे मानते हैं – व्याख्या करने और अगुवाई करने का प्रभुत्व हथिया लिया और स्त्रियों को उससे बाहर कर दिया। मैं इस भेदभाव पर लज्जित हूँ, जिसका मैंने स्वयं समर्थन किया है। अपनी पुस्तक के द्वारा मैंने सार्वजनिक रूप से स्वयं को इससे अलग कर लिया है। मेरी पुस्तक पर कुछ भाइयों का आक्रोश मुझे वह मनोवृत्ति दिखाता है कि पुरुष कैसी प्रतिक्रिया करते हैं जब उनके प्रभुत्व पर प्रश्न उठाया जाता है। इसका अंत होना चाहिए। इसका अंत बहुत पहले हो जाना चाहिए था।

16 सितंबर 2023 का व्याख्यान, FeG Rhein-Sieg (स्वतंत्र सुसमाचारवादी कलीसिया) में, Hans-Jörg Ronsdorf

यह व्याख्यान वेबसाइट पर निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है: www.hans-joerg-ronsdorf.de

टिप्पणियाँ

1. मैं (जर्मन मूल में) व्याकरण के सामान्य पुल्लिंग (जेनेरिक मैस्कुलिन) को दोनों लिंगों के व्यक्तियों के लिए सामूहिक शब्द के रूप में प्रयोग करता हूँ, और उन स्थानों पर अपवाद करता हूँ जहाँ मेरे विचार में स्पष्टता के लिए यह आवश्यक या सहायक है।
2. **Prostatis** यूनानी के "पद में आगे" और "खड़ा होना" शब्दों से मिलकर बना है। नए नियम के सब संबंधित शब्दों का हर वह अर्थ, जो यहाँ लागू हो सकता है, अगुवाई से संबंधित है।